विचार प्रवाह

मेरा गौरव मेरा हिन्दू नववर्ष

भारतवर्ष ने विश्व को काल गणना का अद्वितीय सिद्धांत प्रस्तुत किया है । सृष्टि की संरचना के साथ-साथ ही पितामह ब्रह्माजी ने काल चक्र का भी निर्धारण कर दिया। ग्रहों और उपग्रहों की गति का निर्धारण कर नक्षत्र प्रदान कर दिये । चार युगों की सार्थक परिकल्पना, बारह मास और विभिन्न तिथियों का निर्धारण काल गणना का ही प्रतिफल है जो आज हम बहुत आसानी से देख सकते है।हमारी पञ्चाङ्ग रूपी काल गणना का परिणाम कदापि विफल न रहा। भारतीय पञ्चाङ्ग प्रबलता के साथ, दिशा निर्देशक भी रहा है ,भविष्य में किस प्रकार की चुनोतियों का सामना करना पड़ेगा इस बात की चिंता भी जताता रहा है। यह काल कल्पना वैज्ञानिक सत्यों पर आधारित है। मनुष्य ने काल पर अपनी अमिट छाप छोड़ने के उद्देश्य से कालचक्र को नियन्त्रित करने का भी प्रयास किया । उसने विक्रम संवत्, शक-संवत्, हिजरी सन्, ईसवी सन आदि की परिकल्पना की। जैन और बौद्ध मतावलंबियों ने अपने-अपने ढंग से काल गणना के सिद्धान्त बनाये । हमारे देश में नव संवत्सर का प्रारम्भ विक्रम संवत् के आधार पर चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से माना जाता है और पाश्चात्य दृष्टि से प्रथम 01 जनवरी को नव वर्ष का शुभारम्भ होता है । भारतीय मतानुसार महाराज विक्रमादित्य ने विक्रम संवत का प्रारम्भ किया था । इसकी गणना चंद्रमा के आधार पर की जाती है । इसी दिन से नवरात्र का प्रारम्भ होता है । इस दिन मंदिरों और घरों में घट स्थापित की जाती हैं । जौ बोए जाते हैं और नौ दिन पश्चात् पवित्र नदियों में प्रवाहित कर अपनी मनोकामना पूर्ण की जाती है।हिन्दू नववर्ष को मानने वाले लोग इन दिनों मांगलिक कार्यों का आयोजन करते हैं । गृह-प्रवेश, लगन-सगाई , मानव्रत और विवाह आदि के लिए यह समय सर्वोत्तम माना जाता है। अनेक आस्तिक लोग रामायण पाठ का आयोजन करते हैं । व्यापारी लोग नये बही खाते प्रारम्भ करते हैं । नई दुकानों और व्यापारिक संस्थानों की स्थापना-उद्घाटन करते हैं ।

देश भर में प्रचलित परम्पराओं की बात करें तो आंध्र प्रदेश, कर्नाटक और महाराष्ट्र में घरों को आम के पेड़ की पत्तियों के बंदनवार से सजाया जाता है. इसी तरह 'उगादि' के दिन ही पंचांग भी तैयार होता है. हृदयस्पर्शी है कि महान गणितज्ञ भास्कराचार्य ने इसी दिन से सूर्योदय से सूर्यास्त तक दिन, महीना और वर्ष की गणना करते हुए 'भारतीय पंचांग ' की रचना कर हमारा मार्ग प्रशस्त किया। कई व्यक्तियों की यह भी मान्यता है कि इसी दिन भगवान राम ने बालि के अत्याचारी शासन से दक्षिण की प्रजा को मुक्त कराया था. राजा बालि के संत्रास से मुक्त होकर प्रजा ने घर-घर में उत्सव मनाकर ध्वज (गुड़ि) लगाए थे। उसी की याद में आज भी घर के आंगन में गुड़ी खड़ी करने की प्रथा महाराष्ट्र प्रदेश में प्रचलित है व वर्तमान में यह अन्य प्रदेशों में भी प्रचलित हो गई है। दक्षिण के राज्यों की बात करें तो इस अवसर पर आंध्रप्रदेश में घरों में 'पच्चड़ी/ प्रसादम' बांटा जाता है , कहा जाता है कि इसका निराहार सेवन करने से मानव निरोगी बना रहता है. यूँ तो आजकल आम(कैरी) बाजार में मौसम से पहले ही आ जाता है, किन्तु आंध्र प्रदेश, कर्नाटक और महाराष्ट्र में इसी दिन से 'आम' खाया जाता है ,पारंपरिक रूप से नौ दिन तक मनाया जाने वाला यह त्यौहार दुर्गापूजा के साथ-साथ, रामनवमी को राम और सीता के विवाह के साथ सम्पन्न होता है.

हिन्दू परिवारों में घर-घर जाकर एक दूसरे को नूतन वर्ष की बहुत बहुत शुभकामनाएं प्रेषित की जाती है। सबको गले लगाकर मिठाईयाँ बांटी जाती है। हर्षोल्लास के साथ अपने नूतन कार्यो का आरम्भ किया जाता है।भारतीय संस्कृति का संरक्षण करने लिए हमें अपने धर्म तथा हिन्दू संस्कृति का संवर्धन करने हेतु से नित्य हमें तत्पर रहना होगा। सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाज्ज्ज.के साथ-साथ भारतीय संस्कृति के पोषक तत्वों को ,हमारे मान बिंदु देवालय, मठ मंदिर और संस्कृति का संरक्षण करने का संकल्प लेते है। आपका हिन्दू नववर्ष मंगलमय हो....

कृष्णा सेन्दल तेजस्वी,
इंदौर मध्यप्रदेश

ऑनलाइन गेमिंग पर प्रतिबंध के लिए दिया जाएगा ज्ञापन

इंदौर। मानव अधिकार सुरक्षा संगठन (नई दिल्ली)के इंदौर संभाग प्रभारी डॉ. संतोष वाधवानी ने केंद्र सरकार से मांग की है कि ऑनलाइन गेमिंग पर पूरी तरीके से प्रतिबंध लगाना चाहिए तथा केंद्र सरकार को ऑनलाइन गेमिंग पर रेगुलेशन के लिए कड़ा कानून बनना चाहिए, इसी मांग को लेकर संगठन के कार्यकर्ता सोमवार को कमिश्नर कार्यालय में ज्ञापन देकर मांग करेंगे।

बढ़ती आत्महत्या का कारण एक यह भी - डॉ वाधवानी

डॉ संतोष वाधवानी ने जानकारी देते हुए बताया कि ऑनलाइन गेमिंग की वजह से अनेक छोटे बच्चों और युवाओं को लत लग जा रही है और उनका मानसिक स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है परिस्थितियों तब और अधिक बिगड़ जा रही है जब युवा पीढ़ी आत्महत्या कर रही है और अनेक जगहों पर वित्तीय धोखाधड़ी गोपनीयता और डेटा सुरक्षा की भी समस्या सामने आ रही है कानूनी और अस्पष्टता और रेगुलेशन की कमी के चलते इस प्रकार के मामले बढ़ते जा रहे हैं ऐसी स्थिति में सरकार को शीघ्र कदम उठाने चाहिए।

कार्टून कोना

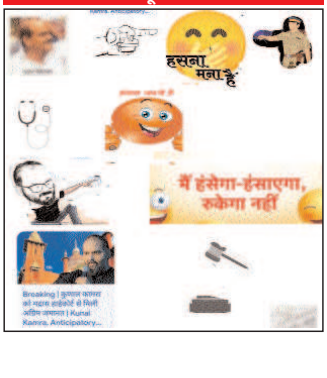

अहिल्याबाई द्वारा किए गए कार्यों के 234 चित्रांकन श्रेष्ठ चित्रकारों से तैयार करवाए

प्रदेश भर में लगाई जाएगी प्रदर्शनी; 5 करोड़ की लागत से लाइट एवं साउंड शो भी तैयार

इंदौर। देवी अहिल्याबाई की 300 जन्म जयंती के अवसर पर भव्य कार्यक्रम आयोजित करने हेतु बनाई गई प्रदेश स्तरीय समिति की दूसरी बैठक भोपाल में मुख्यमंत्री मोहन यादव की अध्यक्षता में संपन्न हुई।

बैठक में मुख्यमंत्री ने बताया कि अहिल्याबाई द्वारा देश भर में किए गए कार्यों के कुल 118 स्थान खोजे गए हैं। इनमें से 90 स्थान पर उपलब्ध कार्यों के 234 चित्रांकन देश के ख्यात चित्रकारों से करवाए गए हैं। इन चित्रों की प्रदर्शनी प्रदेश भर में लगाई जाएगी। महिलाओं की सहायता हेतु स्टार्टप पॉलिसी के तहत योजना तैयार की गई है।

यह जानकारी समिति की बैठक में भाग लेकर लौटे इंदौर के सदस्य माला ठाकुर, अशोक डागा, ज्योति तोमर एवं विनीता धर्म ने प्रदान करते हुए बताया कि पर्यटन विभाग द्वारा अहिल्याबाई के जीवन पर आधारित लाइट एवं साउंड शो 5.40 करोड़ रू की लागत से तैयार

किया गया है जिसे महेश्वर में आम जनता के लिए प्रस्तुत किया जायेगा। बैठक में मौजूद उच्च अधिकारियों ने बताया कि अहिल्याबाई के जीवन पर आधारित नाटकों का विभिन्न संस्थाओं के माध्यम से अप्रैल - मई में जिला मुख्यालय में मंचन किया जाएगा।

नर्मदा परिक्रमा पथ पर माता अहिल्याबाई की मूर्तियां एवं भवन निर्माण करने की योजना भी बनाई जा रही है।

आपने बताया कि स्टार्टअप द्वारा महिलाओं को रोजगार मिले इसलिए कई योजनाओं को स्वीकृत किया गया है। महेश्वरी साड़ी बनाने की ट्रेनिंग देकर अनेक स्थान पर कार्य को बढ़ावा देने का योजना बनाई जा रही है। इस तरह के उद्योग उज्जैन, ओंकारेश्वर, इंदौर में भी लगाए जाना प्रस्तावित है। इंदौर के सदस्यों ने अहिल्याबाई द्वारा निर्मित इंद्रेश्वर मंदिर के पुनर्निर्माण की भी जानकारी मुख्यमंत्री को दी गई। 31 मई के पूर्व किए जाने वाले भावी कार्यक्रमों की जानकारी राष्ट्रीय समिति की महामंत्री माला ठाकुर द्वारा भी मुख्यमंत्री जी को दी गई। बैठक सदस्यों में इंदौर से डॉ माला ठाकुर, अशोक डागा, विनीता धर्म, ज्योति तोमर शहडोल से मेघा पवार, गुना से शिरोमणि दुबे, करेली से राकेश उदानियां, भोपाल से धीरेंद्र चतुर्वेदी के साथ अनेक विभागों के सचिव व उपसचिव मौजूद थे।

इंदौर की मधुशालाओं की यादें

इंदौर, मध्य प्रदेश का एक शहर है, जो अपने स्वादिष्ट खाने और पेय पदार्थों के लिए जाना जाता है। इनमें से एक प्रसिद्ध पेय पदार्थ है गन्ने का रस, जो इंदौर के गन्ना स्थायी मधुशाला लगती थी!

इंदौर की सड़कों पर मधुशाला के नाम से गन्ने का रस बेचने वाले स्थानीय विक्रेता 10-15 साल पहले.

!इंदौर में गन्ने के रस की दुकान को अलग नाम से पहचना जाता था !

वो है समधुशाला।

अरे मधुशाला मने वो अमीताबच्चन के बाऊजी हरिवंशराय वाली मधुशाला नी... अपने यां गर्मी में आईड- साईड खुलने वाली गन्ने के रस की दुकानओन का मधुशाला पेटेंट नाम था।

गर्मी की पेलम-पेली आहट के साथमेइ इन मधुशालाओन के लिए, पेले से फिक्स जगो पे बांस-बल्लिओन से एक अस्थायी टपरा खड़ा किया जाता था। उन बल्लियों पर टाट के पर्दे ठोंक देते थे। पार्टीशन भी टाट के बने होते थे ,फिर इन टाट के परदों को सफेद चूने से पोत -पात के नील के रंग से बेल-बूटे फूल-पत्ति के चित्रों से सजा देते।

फिल्मी हीरो-हिरोईनों के पोस्टरों के साथ मे हर परदे पर प्रति गिलास गन्ने के रस (नींबू अदरक युक्त) का रेट भी लिखा होता था। बड़ा गिलास 2 रु, छोटा गिलास 1.50 रु, बिना बर्फ का 2.50 रु । बाजू में रस के गिलास के चित्र मंडे होते थे।

साइकिल के टायरों से मढ़े सरकंडे के मुड्डों से बनती थी बैठक व्यवस्था।

एक फेमिली रूम भी हुआ करता था खास परिवार के साथ आने वालों के लिए। और इन सबसे पीछे होता था मशीन रूम, जिसके बाहर प्रवेश-निषेध की सूचना लिखी रेती थी।

अपन बच्चों को उस टेम लपक इच्छा होती थी की कौनसी मशीन है जिससे गन्ने का रस निकलता है।

मधुशाला में एक आकर्षण और होता था, वो था बड़े बड़े स्पीकर के साथ म्यूजिक रीकाड प्लेयर। इस पर हिट फिल्मों के गाने बजते थे। फ़िल्म साजन के गाने यहीं बैठकर सुने, ये अभी तक याद है।

गजब का माहौल था उन मधुशालाओं का भिया। वहाँ जाने के बाद बारीक (छोटा छोरा) पानी के गिलास रखते हुए ऑर्डर लेता था।

रस के भरे कांच के गिलास सामने आते ही टेबल पर रखी नमक की डब्बी से गिलास में नमक/ मसाला छिड़कना। (ज्यदातर छेददार पत्रे के ढक्कन चोक होते थे। तब ढक्कन खोल के नमक हाथ मे लेकर डाल लेते थे। कुछ ऐबले इन के ढक्कन ढीला कर रख देते कि कोई इससे नमक छिड़कता तो ढक्कन समेत ढेर सारा नमक रस में गिर जाता।)

रस पीते-पीते आधा होने के बाद एक्स्ट्रा बर्फ की फरमाइश होती तो वेटर एक प्लेट में बर्फ ले आता, तब बर्फ का चूरा रस में डाल कर ठंडे गार रस का देर तक आनन्द लेते।

और हाँ, तब रस के गिलास के साथ मांगने पर स्ट्रॉ भी मिल जाता।

पर अब तो शायद ही भूले भटके इस मधुशालाओं के दर्शन हों..भिया, तुम को मालम पडा की नी

तांगे के बाद अपने यहां की एक और विरासत भट्ट-दने से गायब हो गई हेगी...याद अई...?

नी अई..

मैं बीतलउ? इन दिनों हर सड़क के किनारे खड़े रस की गाड़िओन ने वह पूरा मजा छिन लिया है।

मशीन रूम का रहस्य खत्म हो गया है। अब तो खड़े-खड़े कचकडे के डिस्पोजेबल गिलास में कहाँ वो सुकून से बैठके संगीत सुनते हुए का मजा रिया।

न रिये तांगे और न ही मधुशालाये, अब हर चीज फास्टम-फाश्ट और डिस्पोजेबल हो गई है, शायद जिंदगी भी।

अब भिया याद करने के सिवा अपन कर भी क्या सकते है, हां पर अपने जमाने की बात एक दूसरे मे बात जरूर सकते है... शायद अगले को भी कुछ सुकून मिल जाये....

तो भिया,केने का मतलब है की ये पढ़ते टेम अगर तुमारी आँख ओन के सामने भी कोई सीन दिख गया हो तो अपने साथ वाले भई- बेन ने दोस्तयारओन भी सेंड कर देना... है की नी...!

अच्छा चलूं भिया...

इंदौर में इन मधुशालाओं में , आप मीठे गन्ना या गन्ने को दबाकर निकाले गए रस का स्वाद ले.रहे थे , आमतौर पर हाथ से संचालित रस-प्रेसर में!! इंदौरवासी ताजे गन्ने के रस को देखने से बहुत परिचित हैं और जब इसे ठंडा, पत्थरों पर, अदरक के रस और नींबू के साथ परोसा जाता है, तो यह खुद को एक रोमांचक और आनंददायक ग्रीष्मकालीन पेय में बदल देता है!!

इंदौर की सड़कों पर एक आम दृश्य है, जहां वे अपने गन्ने के रस की दुकानें लगाते हैं। ये दुकानें न केवल स्थानीय लोगों के लिए, बल्कि पर्यटकों के लिए भी एक आकर्षण का केंद्र हैं।

इंदौर के गन्ने के रस को बहुत ही अनोखे और स्वादिष्ट तरीके से परोसते हैं। वे अपने गन्ने को ताज़ा निचोड़कर रस निकालते हैं और फिर उसमें नींबू, अदरक, और अन्य मसालों को मिलाकर एक अनोखा स्वाद बनाते हैं।

इंदौर के गन्ना रस न केवल अपने स्वादिष्ट गन्ने के रस के लिए जाने जाते हैं, बल्कि वे अपनी दुकानों को बहुत ही आकर्षक और स्वच्छ तरीके से रखते हैं। उनकी दुकानें हमेशा साफ-सुथरी और व्यवस्थित रहती हैं, जो ग्राहकों को आकर्षित करती हैं।

अगर आप इंदौर में हैं और गन्ने के रस का स्वाद लेना चाहते हैं, तो आपको जरूर इंदौर के गन्ना रस की दुकान पर जाना चाहिए। उनका गन्ना का रस न केवल आपको ताजगी प्रदान करेगा, बल्कि आपको इंदौर की संस्कृति और परंपरा का भी अनुभव कराएगा।

अजय कुमार बियानी
बालाजी स्काईज़ निपानिया

श्री ग्वाल भैरव कालका माता मंदिर अदभुत रूप में नज़र आया

इंदौर (नवीन मौर्य) । विजयनगर चौराहा स्थित श्री ग्वाल भैरव कालका माता मंदिर इस बार चैत्र नवरात्रि में एक महामाई का दरबार एक अद्भुत रूप में नज़र आएगा। मंदिर प्रांगण को किले की आकृति में दर्शाया जाएगा, जो दर्शकों को एक अनूठा अनुभव प्रदान करेगा। मंदिर के मुख्य पुजारी राहुल यादव जी ने बताया कि इस किलेनुमा आकृति में हिंदुत्व के रक्षक, महान शौर्यवीर योद्धाओं की वीर गाथाओं का सजीव चित्रण किया जाएगा। नवरात्रि के दौरान मंदिर आने वाले श्रद्धालु इन योद्धाओं के बलिदान और वीरता से परिचित हो सकेंगे। चैत्र नवरात्रि के पावन अवसर पर जनकल्याण हेतु सवा लाख काली चालीसा पाठ का दिव्य अनुष्ठान किया जा रहा है।

सहगामी ग्रुप का गठन किया गया

इंदौर। नगर की दिगंबर जैन जैसवाल समाज की सक्रिय महिलाओं ने समाज की प्रतिभाओं को मंच प्रदान करने हेतु एवं समाज में सामाजिक एवं रचनात्मक कार्यों को गति प्रदान करने हेतु सहगामी ग्रुप का गठन किया गया। इस महिला संगठन के तत्वाधान में प्रथम गतिविधि होटल अंगारा में होली मिलन समारोह के रूप में आयोजित की गई ।कार्यक्रम में ग्रुप के संस्थापिका डॉ इंदु- विनोद जैन पेड़ेवाले बताया कि आज के कार्यक्रम की शुरुआत सदस्यों के आगमन पर तिलक लगाकर की गई। सर्वप्रथम दीप प्रज्वलन करके नृत्य भक्ति के साथ मंगलाचरण की प्रस्तुति हुई। तत्पश्चात नृत्य, तंबोला और रोचक गेम के साथ सुंदर कार्यक्रम को आयोजन हुआ ।कार्यक्रम के पश्चात आभार श्रीमती अनिता- अशोक जैन के द्वारा किया गया।

प्रात: स्मरण, अभिव्यक्ति, सुख शांति मय हो यह संसार कृतियां लोकार्पित

इंदौर। संस्था अखंड संडे के तत्वावधान में श्रीमध्य भारत हिन्दी साहित्य समिति में होली मिलन समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर ब्रजेन्द्र नागर की प्रथम कृति प्रातः स्मरण, बृज किशोर शर्मा की सुख शांतिमय हो यह संसार और डॉ. शशि निगम का काव्य संग्रह अभिव्यक्ति का लोकार्पण किया गया। तीनों ही पुस्तकें साहित्य अकादमी द्वारा प्रथम पांडुलिपि अनुदान योजना के अंतर्गत चयनीत हुई हैं।

कार्यक्रम की शुरुआत डॉ. शशि निगम ने सरस्वती वंदना से की। कृतियों पर चर्चा करते हुए साहित्यकार हरेराम वाजपेयी ने कहा कि आज का यह लोकार्पण कुंभ की तरह है जहाँ त्रिवेणी तीनों कृतियों का पावन संगम हो रहा है। सर्वेभवन्तु सुखिनः की भावना के साथ

इन कृतियों को रचा गया है। वहीं प्रो योगेन्द्रनाथ शुक्ल ने कहा कि कविता में भावों को आंदोलन क्रांति करने की अद्भुत शक्ति होती है। जो साहित्य की अन्य विधाओं में नहीं मिलती। इन तीनों कृतियों में सरस, सरल और सहज अभिव्यक्तियाँ हैं जिनके माध्यम से एक स्वस्थ संसार जो सुख शांति मय हो की परिकल्पना की गई है। वहीं प्रदीप नवीन ने कहा कि कवियों के विचार कुछ अलग विविध भाव, शिल्प लिए होते हैं। इन कृतियों में विविध विषयों पर कलम चलाकर कवियों ने सुख शांतिमय हो यह संसार की जो परिकल्पना की है वह वंदनीय एवं स्तुत्य है। सदाशिव कौतुक ने कहा कि सहज सरल भाषा में रची गई कृतियाँ त्रिवेणी की तरह समाज की विसंगतियों को मिटाने में सक्षम है।

इस अवसर पर रतलाम से साहित्यकार दुष्यंत व्यास, वीणा के संपादक राकेश शर्मा, प्रभु त्रिवेदी, दिनेश शर्मा, अनिल ओझा, अरुण निगम, संतोष मोहंति, कार्तिकेय त्रिपाठी, देवास से सुरेन्द्रसिंह राजपूत, रामचंद्र अवस्थी, गिरेन्द्रसिंह भदौरिया, रामचंद्र दुबे, राजेन्द्र शर्मा, मुकेश तिवारी, कमलकिशोर पांडे, श्याम बागोरा, दिलीप मांडलिक, नमिता दुबे, दीपा व्यास, अर्चना शर्मा, निरुपमा त्रिवेदी, नीति अग्निहोत्री, सुनीता कुमावत, मंजु पोरवाल, उषा गुप्ता, शैली भागवत, डॉ. लीला, आशा वडनेरे, कुसुम मंडलोई, रामनाथ मालवीय, अरुण ठाकरे, देवेन्द्र सिसौदिया, विजयसिंह चौहान, नयन राठी, अखिलेश तिवारी, रामनाथ सरल, सुभाष निगम आदि कई प्रबुद्धजन उपस्थित थे। आभार अनिल ओझा ने माना।